त्रिपुरसुन्दर्यै नमः

ल घु स्त व

धर्माचार्य कृत

पंचस्तवी

का

प्रथमस्तव

कश्मीरी में रूपान्तरकार

प्रो० ओंकार नाथ चरंगू

मिलने का पता :—

भगवान गोपी नाथ आश्रम, बोड़ी उदयवाला, जम्मू।

पम्पोश एन्क्लेव, नई दिल्ली-48

जुलाई, 1996 मूल्य रु० 5-00

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्रस्तावना

पञ्चस्तवी एक अद्भुत स्तोत्र है। काश्मीर तथा दक्षिण भारत में इसका प्रचार प्राचीन काल से चला आ रहा है। इसके रचयिता धर्माचार्य निर्धारित किया गया है। परन्तु उनके जन्म-कर्म के बारे में अभीतक कोई निश्चय नहीं हो पाया है। भक्ति और कुण्डलिनी - योग सम्बन्धी इन स्तुति - श्लोकों के हिन्दी, अंग्रेजी तथा कश्मीरी भाषाओं में कई अनुवाद छप चुके हैं परन्तु शाक्तमतानुसार इनके सूक्ष्म अर्थ (रहस्यार्थ) प्रकट करने के प्रयास बहुत कम हुए हैं। दक्षिण भारत में भी इस पुस्तिका के आंशिक रूप में अनुवाद तथा टीकाएं हुई हैं। काश्मीर के विद्वद्वर्य पण्डित हरभट्ट शास्त्री ने इस स्तव - रत्न पर संस्कृत में एक विस्तृत टीका लिखी है जिस में वेद, तन्त्र, पुराण आदि ग्रन्थों से उद्धरण लेकर बहुत हद तक रहस्य - निर्देशन किया गया है। परन्तु खेद है कि इसके कुछ अंश ही जम्मू कश्मीर सरकार के शोधकार्यालय से 1960 - 63 ई० में प्रकाशित हुए। दुसरा-तीसरा स्तव अप्रप्य है।

पंचस्तवी का काश्मीरी भाषा में पद्य - अनुवाद कई वर्ष पूर्व पहली बार पण्डित जिया लाल सराफ ने किया। यह लोकप्रिय बन गया। पण्डित जनता में मां त्रिपुरसुन्दरी के प्रति भक्तिभाव अधिक जाग्रत हुआ। बच्चे - बूढे, स्त्री - पुरुष इन मीठे पद्यों को देवालयों, मन्दिरों और घरों में प्रेम – पूर्वक गाते हैं और शान्ति - सुख का अनुभव करते हैं। मूल संस्कृत में इस का पाठ करने से भक्तजन आह्लादित होते हैं। सूक्ष्म अर्थ का अनुभव करते हुए इन श्लोकों के पाठ से इच्छित फल की प्राप्ति

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

होती है, ऐसी श्रद्धालु जन की धारणा है । स्वभावत: इनके सूक्ष्म और तथ्यार्थ को जानने की उत्सुकता भक्तजन में अधिक होने लगी।

प्रो० ओंकारनाथ चुरंगू ने कई वर्ष पूर्व पंचस्तवी के अर्थ को कश्मीरी पद्य में अधिक स्पष्ट करने का प्रयत्न किया था । परन्तु कठिन होने के कारण काम रुका पडा । प्रकृति - नियम के अनुसार समय आने पर ही फल पकता है। देश से निर्वासित होने पर हम से कई बिछुड गए कई और मिले । चिदानन्दमयी भगवती महामाया की प्रेरणा से चुरंगूजी हमारी सत्संग गोष्ठी में आने लगे और पंचस्तवी की व्याख्या सुनकर अपने प्रयास को मानसिक सन्तोष से पूर्ण करने का निश्चय किया। फलत: प्रथम स्तव का कश्मीरी भाषा के पद्यमें सुन्दर रूपान्तर किया । इस कार्य में उन्हों ने अपनी काव्य-प्रतिभा तथा गम्भीर अवगहन का परिचय दिया है। मैंने इस रूपान्तरण को ध्यान से पढा और उनके परिश्रम का अनुमोदन करता हूं। उन्हों ने केवल शब्दार्थ को न लेकर लक्ष्यार्थ द्वारा तत्त्वार्थ को अलंकारिक भाषा में रूपान्तरण करने का सफल प्रयत्न किया है। जगन्माता से हमारी प्रार्थना है वह इस कार्य को यथायोग्य पूर्ण करें जिससे उनको सन्तोष मिलेगा और जनता को भी यथार्थ लाभ होगा।

जम्मू
जून 20, 1996

जानकीनाथ कौल
'कमल'

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दो शब्द

पंचस्तवी समस्त हिन्दू जनता के लिये देवी उपासना का एक महान स्तुतिग्रन्थ है। काश्मीर एक शक्ति-पीठ होने के कारण इस स्तुति की और भी महानता रही है। काश्मीरी घरों में पंचस्तवी का पाठ सुललित छन्दों में विशेष अवसरों पर तथा दैनिक-पाठक्रम से होता रहता है। विरला ही कोई घर होगा जहां पंचस्तवी पुस्तक न हो या इस के श्लोकों का पाठ न होता हो।

पंस्तवी के पांच स्तव हैं। लघुस्तव पहला है और सब से छोटा भी। यूं तो पंचस्तवी का कई भाषाओं में अनुवाद तथा टीकायें हुई हैं और काश्मीरी भाषा में पंडित जिया लाल जी सराफ ने इसका लीला रूपी साधारण अनुवाद किया है जो लोक प्रिय भी है।

काश्मीर से हिन्दुओं का बहुत समय से पलायन होता रहा है पर 1989 ई० में आतन्कवाद फैलने से लगभग सारा काश्मीरी पण्डित समाज भारत वर्ष में इधर उधर विखर के रह गया है। इस कारण पंचस्तवी का प्रसार उन तक पहुंचाना अनिवार्य बन गया है।

मेरे मन में बहुत समय से पंचस्तवी का विस्तार से सरल काश्मीरी भाषा में पद्य-अनुवाद करने की प्रबल इच्छा रही है।

जगत गुरु भगवान गोपीनाथ जी महाराज की कृपा से मैंने इस ग्रन्थ का पण्डित जानकीनाथ कौल 'कमल' के साथ

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बैठकर अध्ययन किया और उन्हीं की प्रेरणा से प्रभावित होकर पहले लघुस्तव का इस ओर प्रयत्न किया है।

इस पुस्तिका को आप तक पहुंचाने में श्री सोहनलाल खुरदो, श्री तेजकृष्ण रैणा तथा श्री चमनलाल दुरानी ने सहयोग दिया। श्री अशोक जी ने इस को मधुर आवाज में गा कर कैसेट में भरने की सहायता दी। मैं उन का आभारी हूँ

अन्त में फिर एक बार श्री जानकीनाथ कौल 'कमल' जिन्होंने इस अनुवाद को सुधारने में मेरी सहायता की हैं—प्रणाम करता हूँ। यदि भक्तजनों को इस प्रयास से कुछ लाभ होगा तो मैं अपने आप को धन्य मानूंगा।

59 - ए पटोली, ओंकार नाथ चूरंगू
जानीपुर, जम्मू।

(4)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ॐ श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः

ध्यान - समरणा

—o—

अ'स्य हय मा'ज्य आय शरण चान्यन चरणन
वरणन कर'न्ये चोनुय बजर
सुय बजर युस छु माता ज़गतस व्या'पित
कासान दु:ख त' दा'द्य ज़य दिवान पूर'
अ'स्य त'वय गुल्य गण्डिथ छिय प्यवान च़्य परण
गछ़ प्रसन्न असि कर अज्ञान दूर
माता गछ़ प्रसन्न असि कर अज्ञान दूर

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अथ लघुस्तव: प्रथम:

1

ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती मध्ये ललाटं प्रभां,
शौक्लीं कान्तिमनुष्णगोरिव शिरस्यातन्वती सर्वत: ।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशो: सदाह: स्थिता
छिन्द्यान्न: सहसा पदैस्त्रिभिरघं ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ।।

राम' राम' बद्रन्य दून्य हिश दीप्ती
शूबिदार त' चम'कबु'न्य डयकि दा'रमु'च
शीतल सफेद चन्द'रम' हिवि प्रकाशि सू'त्य
शेरि प्यठ शूबरोवमुत छून ब्रमाण्ड
शोंगरूफ' रंग' जु'च' सिरियि प्रकाश ज़न
हृदयम मंज़ यस छुन्यत प्रज़लान
यिम'बु'य त्रयव गुण कार्णव बनेमु'च
ऐं क्लीं सौ: चिय छे माला ना'ल्य
ज्योतिमयतु' वा'णीमय युसु त्रपुरा
ह'र्यतन सारि'नय सा'रीय पाप ।

2

या मात्रा त्रपुसीलतातनुलसत्तन्तूत्थिति स्पर्धिनी
वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम् ।
शक्ति: कुण्डलिनीति विश्वजनन-व्यापार बद्धोद्यमा
ज्ञात्वेत्थं न पुन: स्पृशन्ति जननी गर्भेऽर्भकत्वं नरा: ।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वाक' बीज़' मन्त्रुक गुडन्युक शब्द' ऐं
ज़गत'कि वुत्पती हुन्द छु कारण
ग्यवथीर ल'ण्ड ज़न आ'विज 'त जा'विज
ज़ोत'वुन्य त' शुभ'वन्य क्रीडा करान
ऐंमुक जा'विजार आ'विज्य क्रीडा
कुण्डलिनी विकास' किन्य वुदयस यिवान
साधक तमिय' - स्वरूपुक ध्यान - धारान
विज़िविज़ि पूज़ायि मंज छ़ारान
य'म्य तमि शक्ती हुन्द अनुभव कोर'
तंस छुन' गर्भुक होंछ ब्ययि लगान ।

3

दृष्ट्वा संभ्रमकारि वस्तुसहसा ऐ ऐ इति व्याहृतम्
येनाऽकूतवशादऽपीह वरदे ! बिन्दुं विनाप्यक्षरम् ।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे
वाचः सुक्तिसुधारसद्रवमुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात् ।।

ही वरदायनी ही त्रुपुर सुन्दरी
चानि नाम' सुम'रनि कोताह बजर
यो'द काहं भयानक भय केंह डोशिथ
वछि' 'वालिजि क्रख दियि ऐ ऐ
गल'थु'य मन्'तर यो'द ऐ छु ऐंमुक
सुय बनान छु पातु'र चानि प्रेयमुक

(7)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्रावान सरस्वतियि हन्द सुय वरदान
सारस्वत वा'णी मू'ख' नेरान
बु'त्रि अड'को'ल खो'खर्यव अछ'रव सू'त्य
गुल्य गंडिथ प्रारान वरदान'सय

4

यन्नित्ये ! तव कामराजमपरं मन्त्राक्षरं निष्कलम्
तत्सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद्बुधश्चेद् भुवि ।
आख्यानं प्रतिपर्व सत्यतपसो यत्कीर्तयन्तो द्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पदप्रणायितां नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम् ।

दो'युम मन्'तर चोन कामराज क्लीं छुय
यम्'य सु निष्कल जो'प अ'किम्यि पा'ठय
ज्ञानान जा'विज्ञार बोज' अक्षरूक सुय
प्रावान सरस्वती हुन्द सुय प्रसाद
सत्यतपस अमिकुय तत्वज्ञान जा'निथ
अमिय मन्त्र ओसुय आवाहन करान
ऋष्य ब्राह्मन तप जप यगन्य सा'रिय
अमीय मंत्र' स'त्य छिय आरम्भ करान

5

यत्सद्यो वचसां प्रवृत्तिकरणे दृष्टप्रभावं बुधैः
तार्तीयीकमहं नमामि मनसा त्वद्बीजमिन्दु प्रभम् ।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अस्त्वौर्वोऽपि सरस्वतीमनुगतो जाड्याम्बुविच्छित्तये
गौः शब्दो गिरिवर्तते सनियतं योगं विना सिद्धिदः ॥

च्योन बीज़ अक्षर त्रयुम मन्त'र सौः
यथ नमन छुस करान बारम्बार
कारण अमिकुय सारस्वत ज़ा'निथ
सरस्वती छि रोज़ान मु'खसु'य प्यठ
गौः शब्'द ग छे'नि औ च'टि अज्ञान
यिथ कंन्य वाडवअगनी छ' चटान
तिथय पा'ठय मल द'ज़ि चलि तस अज्ञान
यूग साधनय ब'नि सुय ज्ञानवान

6

एकैकं तवदेवि ! बीजमनघं सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं,
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रमगतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात् ।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं
जप्तं वा सफली करोति सहसा तं तं समस्तं नृणाम ॥

मन्त'र त्रनवय चा'न्य बीज़ अक्षर
पर्यंतन कान्छा कुनि शुमार' सू'त्य
वुल्ट' स्योंद पत' ब्रोंठ व्यो'न व्यो'त इकवट'
व्यन्जन' सोस व्यन्जन' रो'स सार छु न' डलान
ध्यान'य योत ग'छि पोखत' तस आसुन

(9)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

यि'य छांडि तिय छुस ब्रोंठ कुन यिवान
म्यति कल मा'ज्य छम बस 'तमि ध्यान'च
ज़फ़ क'रिथ ध्यर कर' मन तय प्रान

7

वामे पुस्तक धारिणीमभयदां साक्षस्रजं दक्षिणे
भक्तेभ्यो वरदानपेशलकरां कर्पूर कुन्दोज्ज्वलाम् ।
उज्जृम्भाम्बुजपत्रकान्तनयन स्निग्ध प्रभा लोकिनीं
ये त्वामऽम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां कवित्वं कुत: ॥

खोव'र्यन अथन द्व'न प्यठिमिस छय पुस्तक
दोयिमि अथ' सू'त्य ज्ञान' मुद्रा अभय
दछिन्यन अथन द्व'न बोनिमिस छय ज़पमाल
हेरिमि अथ' भ'खत्यन वरदान दिवान
कुन'दपोश त' कोफ़ूर हिह न्यत्रकमल चा'न्य
चतुर्भुज़' रूप' मा'ज्य छख च' प्रजलान
कव' बनन ज्ञानी त' विदवान अम्बा
यिम न' अमि स्वरूपुक ध्यान धारन

8

ये त्वां पाण्डुर पुण्डरीक पटलस्पष्टाभिरामप्रभां
सिञ्चन्तीममृतद्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम् ।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षर पदा निर्याति वक्त्राम्बुजात्
तेषां भारति ! भारती सुरसरित्कल्लोल,लोलोर्मिवत् ।।

सफेद पम्पोश' फो'लिम'त्यन'य डलन मज्
शुभायि सोस' सुन्दर च्योन स्वरूप
यहय रूप अमृतधारा बा'निथय
सगवान साधकन अन्ताकरणा
ऐं क्लीं मन्त्रन हु'न्द बज़र कोताह
अमृत प्रवाह द्वादशान्त सगवान
यिथिय स्वरूपुक माता भाग्यवान साधक
ध्यान' दारानाय मंज़ तिम छि रोज़ान
गंगाय हु'न्ज़ स'नि सुन्दर त शीतल
प्रवाह हिश ति'हन्ज़'य वा'णी बनान
अमृत बा'णी तिह'न्दि मु'ख नेरान
परिपूर्ण कविता स्व'य बनान
असि ति मा'ज्य दिखना प्रसाध अमि ध्यानुक
ब' ति क'र हा चा'नी यिछ़ त्वता

9

ये सिन्दूरपरागपुजंपिहितां त्वत्तेजसा द्यामिमाम्
उर्वीचापि विलोन यावकरस प्रस्तार मग्नामिव ।
पश्यन्ति क्षणामऽप्यऽनन्य मनसस्तेषामऽनङ्गज्वर-
क्लान्ता स्रस्तकुरङ्ग शावक दृशो वश्या भवन्ति स्फुटम् ।।

(11)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

क्लीं सौः बीज़' मन्त्रन हुन्द स्वभाव यु'थ
फोत' मोखत' सपदान पो'खत' ध्यान सू'त्य
चोन तोज़' रूप युथ सुन्दर त' अदभुत
आकाशस ज़न लोग' सेन्दरि रंग
प्रथवी ति बासान ज़न आयि ग्रकव'न्य
लाछ' सूत्य बोज़िल रंग' रंग'नावनय
येमि यि रूप माता वुछ खयन' मात्रस
तस का'ति ओर योर ध्यान छु डलान
वासनाय' यिम यिम छि मन'सय वोथन'य
धारनाय तिम छि चानि बस शम'न'य
तिथय पा'ठि यिथक'न्य स'ह ज़न डीशिथ
हिरण' बच्च' खोखत्यन छिय अ'चा'नी
सारि'य यन्द्रय ईकागर गा'छ्थ
चानि धारनाय मंज लय छि गछ़ान
मेति ग'छ़ यिथय पा'ठि मन युन व्यकासस
युथ न ध्यान्' मज़ डलन ज़ान्ह च़रन चा'नि

10

चञ्चत्काञ्चन कुण्डलाङ्गदधरामाऽबद्ध काञ्चीस्रजं
ये त्वां चेतसि तद्गतेक्षरामपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितिम् ।
तेषां वेश्मसु विभ्रमादहरहः स्फारी भवन्त्यश्चिरं
माद्यत्कुजंरकर्ण तालतरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः ॥

(12)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

यिथ' पा'ठय कनपट मद'मस हो'स कांह
विज़ि विज़ि थक' रो'स वावपट करान
तिथय पा'ठय लक्षमी छन' सदा रोज़ान
अकिसु'य जायि अकिसु'य घरस मंज़
मगर अख स्वरूप चोन सु'न्दर 'त अदभुत
हे'रि बुं'न' सु'न' सन्दल पा'रिथ
सु'न' सुन्द्य कनदूर बाज़बन्द 'त मछ़बन्द
हलिस सु'न' ता'गर गन्डिथ'य छय
आसि कां'सि म'न किन्य माला ज़प किन्य
ऐं क्लीं सौः रूप' ध्यान दोरमुत
तस जांह ति कुनि विज़ि ही सुखदात्री
सु'ख त' सम्पदा छ न' त्रा'विथ गछ़ान

11

आर्भट्या शशिखण्डमण्डित जटाजूटां नृमुण्डस्त्रजं
बन्धूक कुसुमारुणाम्बरधरां प्रेतासनाध्यासिनीम ।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामाऽपीनतुङ्गस्तनीं
मध्ये निम्नवलित्रयाङ्कितनुं त्वद्रूपसंवित्तये ।।

मस जट' त'रंग' लाट' पाठय छय वजिम़'च़'
यथ गण्ड' रटिथु'य छें चन्द्रकला
हटिस छय नर कल' माला त्रा'विथ
बन्धुक' पोश' बु'ज़ल्य जाम' पू'रिथ
शिव' रूप' शव छुय आसन प्रोवमुत

(13)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

चतुर्बुज' त्रिन्यथर धा'रिम'ति छिय
ज्ञान' क्रियाय सोस वछ युथ फु'लवु'न
भव-अभव-अतिभव रेखा मंज़स
अमिय स्वरुपुक मा'ज्य वीरवर साधक
महिमा ज़ाननुक ध्यान छिय करान

12

जातोऽप्यऽल्प परिच्छदे क्षितिभुजां सामान्य मात्रे कुले
निः शेषावनिचक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः ।
यद्विद्याधरवृन्दवन्दितपदः श्रीवत्सराजोऽभवत्
देवि ! त्वच्चरणाम्बुज प्रणतिजः सोऽयं प्रसादोदयः ॥

साधारन को'लस म'ज़ ज़ाव वत्सराज
प्रोव ता'मि सारीय ज़गतुक राज
त्युथ चर'क्रवर्ते' राज़' ऐश्वर्यवान त्युथ
प्रथवी ओसुय न जांह डयुशमुत
तस अमि बज'रुक ओस कुन' कारण
न्यथ प्रथ चरण' कम'लन ओस नमान
विद्यादर वे'यि ज्ञानी त' भाग्यवान
आ'सिस न्यथ चरण' वन्दना करान
वत्सराज़स यूत अनुग्रह सपद्याव
श्रदाय' सू'त्य चा'नि पाद पूज़िन

13

चण्डि त्वच्चरणाम्बुजार्चनविधौ बिल्वीदलोल्लुण्ठनं
त्रुट्य त्कण्टककोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः ।

(14)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

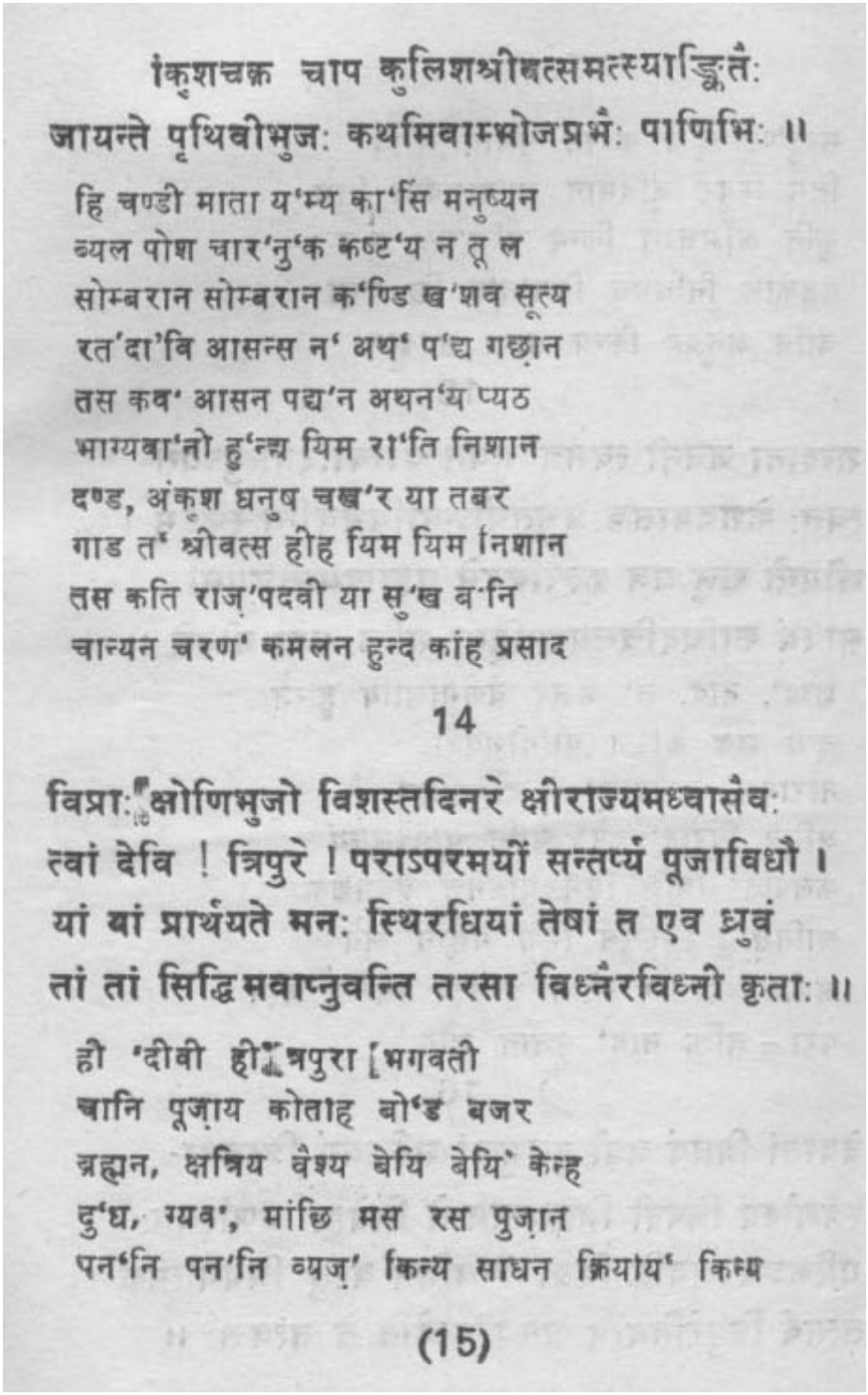

अंकुशचक्र चाप कुलिशश्रीवत्समत्स्याङ्कितैः
जायन्ते पृथिवीभुजः कथमिवाम्भोजप्रभैः पाणिभिः ॥

हि चण्डी माता य'म्य का'सि मनुष्यन
ब्यल पोश चार'नु'क कष्ट'य न तू ल
सोम्बरान सोम्बरान क'ण्डि ख'शव सूत्य
रत'दा'वि आसन्स न' अथ' प'द्य गछान
तस कव' आसन पद्य'न अथन'य प्यठ
भाग्यवा'नो हु'न्द्य यिम रा'ति निशान
दण्ड, अंकुश धनुष चख'र या तबर
गाड त' श्रीवत्स हीह यिम यिम निशान
तस कति राज'पदवी या सु'ख ब'नि
चान्यन चरण' कमलन हुन्द कांह प्रसाद

14

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदिनरे क्षीराज्यमध्वासैवः
त्वां देवि ! त्रिपुरे ! पराऽपरमयीं सन्तर्प्य पूजाविधौ ।
यां यां प्रार्थयते मनः स्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवं
तां तां सिद्धिमवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नी कृताः ॥

ही 'दीवी ही त्रिपुरा [भगवती
चानि पूजाय कोताह बो'ड बजर
ब्रह्मन, क्षत्रिय वैश्य बेयि बेयि' केन्ह
दु'ध, ग्यव', मांछि मस रस पुजान
पन'नि पन'नि व्यज' किन्य साधन क्रियाय' किन्य

(15)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सन्तु'ष्ट च'य करान पूज़ाय सू'त्य
तिम स्थिर वुदिमान अभ्यासवान तिम
कुनि अभिलाश किन्य पूजि'तन च'य
ततकाल निर्विघन तिम'न'य छि यछ़ा
चानि अनुग्रह किन्य प्राप्त सपदान

15

शब्दाना जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे
त्वत: केशववासव प्रभृतयोऽप्यायिर्भवन्ति स्फुटम् ।
लीयन्ते खलु यत्र कल्पविरमे ब्रह्मादयस्तेऽप्यमी
सा त्वं काचिदचिन्त्यरुपहिमा शक्ति: परा गीयसे ॥

शब्द', नाद, त' अक्षर वर्णेमालायि हु'न्ज़
च'य छख कारण वा'गीशवरी
नारायण, यन्दराज़' - दीवतागन
अमिय विराट' रुप' चानि वु'पदेमु'त्य
कलपांत' विजि़ यिम दीवगण ब्रह्माद्यक
चानिसू'य स्वरूपस छिय गछ़ान लय
अमीय व्यस्तार सो'स अचिंत्य स्वरूप चोन
परा – शक्ति नाव' पूज़ान छोय

16

देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां शक्तित्रयं त्रिस्वरा-
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुऽकरमथो त्रिब्रह्म वर्णास्त्रय: ।
यत्किञ्चज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं
तत्सर्वं त्रिपुरेतिनाम भगवत्यम्बेति ते तत्वत: ॥

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

युस ति कॅह त्य त्य त्यन हुन्द म्युलगव
त्रपुरा ना'व चोनुय छु बखनान
ब्रह्मा विषनू रुद्र'र ति त्रेय दिवता
दीव' बा'णी ति त्यन वीदन मंज़
अ'गन' दीवता स'न्ज़ ति त्य प्रकार' अगनी
त्यन लुकन मंज़ छि भू भुवः स्वः
गायत्री' ति त्यय पद पुशकर ति त्रेय यूग
वर्णन मंज़ ति अ, ऊ. म त्रयय
त्रिब्रह्म नर शक्ति शिव त्रेय रुप' छि'य
त्रिशक्ति ति त्रेय स्वर ब्यापक छि'य
यि कॅछा ज़गतसम मंज त्रपोर सुन्दरी
त्रेयि तत्व चे'य पत' पत' फेरान

17

लक्ष्मीं राजकुले जयां रणभुवि क्षेमङ्करीमध्वनि
क्रव्याद द्विपसर्पभाजि शवरीं कान्तारदुर्गे गिरौ ।
भूतप्रेतपिशाच जम्बुकभये स्मृत्वा महाभैरवीं
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोयप्लवे ॥

लक्षमी छे पूज़ा राज़' 'कुलन मंज़
रण भूमिय मंज़ जया भगवती
स'ह सुरुफ भयानक वत' सफरन प्यठ
क्षीमंकरी नाव' भय छख हरान
भयानक ज़गलन कठिन्यन पहाडन
शिका'र्यबाय रूप' ज़फ चोन तारान
भूत प्रे'त प्यशाच् जम्भुक येंष भयि विज़

(17)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महा भैरवी नाव' लूख छिय ज़पान
मूह बरिमु'तिसु'य यथ संसारस
त्रपुरा नाव चोन मूह छु च़टान
सकंट' रुप' सह'लाबन मज़ मा'ज्य
तारा रुप नाव' तार' तारान
यिम'व संकटव विज़ि ही गज़तअम्बा
सुमरण चा'निय छ' सकट हरान

18

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी ।
शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यसि ॥

च'वुह रुप' ध्यान चोन चो'व'ह्व नावव
यिमन स्मर्ण क'र यिथ पा'ठि यंशव
माया च़य कुण्डलिनी चय क्रिया च़य
मधुमती काली कला त' मालिनी
मातङ्ग-पुत्री मातङ्गी च़य
विजया जया भगवती त देवी
शिवा - शक्ति त शामबवी शक्ति च़य
शंकर - वल्बा त वागवादिनी
त्रिनयना रुप' च़य भैरवी त त्रिपुरा
ह्रीम्का'री त' बे'यि परापर - मयी
ज़गतपालिनी माता रुप ति चोनुय
जननी रुप' कोमारी ति च़य

(18)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

19

आई पल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वि त्रिक्रमाद्यक्षरैः
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च तैः सस्वरैः ।
नामानि त्रिपुरे ! भवन्ति खलु यान्यत्यन्तगुह्यानि ते
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशतिरुहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ॥

ह्यी त्रपोर सुन्दरी वर्णमालाय' यिम
आ ई इत्यादी स्वर छि शुराह
ककार प्यठ' क्षकारस ताम बेयि छि व्यनजन
यि'मनय बनान अक्षर छि बारियाह
द्वो'न द्वो'न त्रन त्रन हु'न्दि क्रम' सू'त्य
वुह सास' प्यठि छि नाव चा'नी बनान
यमनय अक्षह्लीं नफह्लीं शब्दन
चान्यन रूपन छुस नमन करान
ह्यी त्रपुरा ! ह्यी भैरव पतनी
बीज़ाक्षरन म'ज़ छि चा'नी रुप

20

बोद्धव्या निपुणा वुधैः स्तुतिरियं कृत्वा मन्स्तद्गतं
भारत्यास्त्रिपुरेत्यनन्यमनसो यत्राद्यवृते स्फुटम् ।
एकद्वित्रिपदक्रमेण कथितस्तत्पाद संख्याक्षरैः
मन्त्रोद्धारविधिविशेषसहितः सत्संप्रदायान्वितः ॥

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

यि त्वता माता गु'डिनिकि तव चोय
गाट'ल्यव बीज़ मन्त्रव किन्य' ज़ा'नि
प्यठय बान' गुडनिकिसु'य शलूकस म'ज़
ऐं क्लीं सौः ध्यानस म'ज़ र'टिख
भक्तिभाव' कि'न्य ईकागर सपदिथ
सरस्वती हु'न्द प्रोवुख युथ प्रसाद
सतन बीज़ अक्षनं ह'न्दि यिम त्रे मंत्र
सतगु'रुव ज्ञान' भाव' वर्णन का'रि
यहय त्वता म्यति मांज्य अज्ञान चटितन
सरस्वती हुन्द ब'नितन अख ऊपाय

21

सावद्यं निरवद्यमस्तु यदि वा किं वा नया चिन्तया
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्ति स्त्वयि ।
सञ्चिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं सञ्जायनानं हठात्
त्वदभक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मान्मयापि स्फुटम ॥

शु'द अशु'द शबदव किन्य त्रुपुर सुन्दरी
यो'द म्य क'र यि त्वता तोति क्याह गव
पन'नि भक्ति - भाव' सू'त्य ही ज़गत अम्बा
वाचाल ब'निथ'य क'रमय तुता
मा'निथ ज़ि छुप अरव न'कुटय साधक
हठ' किन्य फूर'म यि तेज वाणी
अमीय हठ' भाव किण्य ही दयासागरी
लघुस्तव चिय' क'र म्य यिछ वखनय
यमिस चाण्य भक्ति आसि सू'य साधक
क'रि विजि विजि चा'न्यि यि त्वता

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आराधना

प्रो० ओंकार नाथ च्रंगू

गु'र' दोव रोज़तम सहायतस
मन म्योन अन्तन कोबहम
रज़' कर अमिस वो'ट बान्दरस
यिथ' ख्यल छु रोज़ान मंज़ डलस

क़ालन गर्योनस रचि़े म्यच़े
ग्रट कर्मने रोटनस कच़े
शोंगरफ म्यरंग खार मज़ं मनस

आसन छु कीमियागर मु'र'य
पात्र ति गछि़ नेरुन शिशिय्
युथ व्रि सु पानय पान' तस

गुर' स'ज़ कृपा यस रछ बने
ओड्युक न नेरि कंति मनकले
रगं' रगं' म्य करतम रंग रोस

मत त्रावतम वो'न्य अडवते
युथ न' फेर' यति व्ययि वतिवते
टिकिलिस गण्ठुम पन'निस बरस

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com